Chap-5

पंचम अध्याय

निराला के गीतों का वर्गीकरण

विषय वस्तु की दृष्टि से :- प्रेम और शृंगार के गीत, प्रकृति सम्बन्धी गीत,
मानवतावादी गीत, शोक गीत,
प्रगतिशील तथा प्रयोगशील गीत, आत्मपरक गीत,
राष्ट्रीय गीत, , रहस्यवादी गीत,
भक्ति प्रधान और विनय के गीत,
हास्य और व्यंग्य गीत, स्फुट गीत ।

रस की दृष्टि से गीतों का वर्गीकरण :- शृंगार, वीर,
करुण, रौद्र, वीभत्स,
भयानक, अद्भुत, हास्य,
शान्त, भक्ति, , वात्सल्य.

- :: निराला के गीतों का वर्गीकरण :: -

छायावादी कवियों में 'निराला' जी सर्वाधिक क्रान्तिकारी कवि रहे हैं। निराला जी की सम्पूर्ण काव्य साधना शैली शिल्प सम्बन्धी विभिन्न प्रयोगों की अटूट श्रृंखला है। प्रयोगशीलता, निराला जी के काव्य का विशेष गुण है। अपनी प्रतिभा से उन्होंने काव्य में विभिन्न प्रकार के नये आयाम प्रस्तुत किये। गीतों के रूप में निराला जी की विशिष्ट देन हिन्दी-साहित्य को मिली है। इस क्षेत्र में वे निरन्तर प्रयोगशील रहे हैं। 'परिमल' में निराला जी की आरंभिक रचनाएँ संगृहीत हैं। उनमें कवि का प्रसन्न एवं स्वस्थ व्यक्तित्व दिखाई देता है। भावों की तन्मयता तथा अभिव्यक्ति की स्वच्छता इन गीतों की विशेषता है। गीतिका में उनका कलाकार रूप हमारे सामने आता है। 'गीतिका' हिन्दी-साहित्य के लिये उनका बहुत बड़ा उपहार है। इसमें कवि ने बड़ी कुशलता से काव्य और संगीत का सामंजस्य किया है। 'कुकुरमुत्ता' के रूप में उन्होंने हिन्दी को अपना प्रखर व्यंग्य काव्य दिया। 'अणिमा' के गीतों में निराला जी की दृष्टि अन्तर्मुखी हो गई है। अर्चना, आराधना तथा गीतगुंज उनकी परवर्ती रचनाएँ हैं, इनमें मूल स्वर भक्ति का है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि निराला जी के गीतों में श्रृंगारिकता, रहस्यवादिता, राष्ट्रीयता, आत्मपरकता आदि सभी प्रवृत्तियों की झलक दिखाई देती है।

अतएव इस अध्याय में हम निराला जी के गीतों को वस्तु तथा रस दोनों ही दृष्टियों से वर्गीकृत करने का प्रयास करेंगे ।

विषय वस्तु की दृष्टि से निराला जी के गीतों कावर्गीकरण इस प्रकार किया जा सकता है :-

१- प्रेम और श्रृंगार के गीत ।
२- प्रकृति सम्बन्धी गीत ।
३- मानवतावादी गीत ।
४- शोक गीत ।
५- प्रगतिशील तथा प्रयोगशील गीत ।
६- आत्म परक गीत ।
७- राष्ट्रीय गीत ।
८- रहस्यवादी गीत ।
९- भक्ति प्रधान और विनय के गीत ।
१०- हास्य और व्यंग्यमय गीत ।
११- स्फुट गीत ।

<u>प्रेम और श्रृंगार के गीत :-</u> निराला जी की प्रारम्भिक रचनाओं में प्रेम और श्रृंगार का स्वर बड़ा सबल एवं सशक्त है परन्तु आगे चलकर अंतिम रचनाओं में प्रेम और श्रृंगार का यह स्वर क्षीण होता गया है । प्रेम और श्रृंगार सम्बन्धी निराला की विचारधारा समय के साथ हमेशा बदलती रही है । पूर्ववर्ती रचनाओं में निराला जी की श्रृंगारिक भावना बहुत प्रबल दिखाई देती है परन्तु परवर्ती रचनाओं में कवि की भावना मन्द होगई है । " अणिमा " में " नूपुर के सुर मंद रहे " विशुद्ध नारी श्रृंगार की रचना है परन्तु इसके पश्चात् लौकिक श्रृंगार की ओर निराला जी की रुचि कम हो गई है स्वयं निराला जी ने लिखा है -

"भूले उर की प्रेमिका की,
गन्ध का वाहक नहीं अब,
मुक्त नयना संगिनी का,
पथिक परिचायक नहीं अब ।

* * *

बरसने को गरजते थे
वे न जाने किस हवा से
उड़ गये हैं गगन में घन,
रह गये हैं गगन में घन,
रह गये हैं नयन प्यासे ।"[1]

"यह गीत निराला की श्रृंगारिक भावना में एक नये परिवर्तन की सूचना देता है और नारी श्रृंगार से हटकर प्रकृति श्रृंगार की ओर उसकी मन:स्थिति का लगाव जहाँ एक ओर उनके स्वाभाविक वय - विकास की सूचना देता है, वहाँ दूसरी ओर वह उनकी नारी के प्रति क्रमश: आने वाली गम्भीर और उदात्त भावना का भी परिचायक बन गया है ।"[2]

निराला जी को अपनी पत्नी से अत्यन्त प्रेम था । निराला जी ने अपने काव्य में नारी को उचित स्थान प्रदान किया है । निराला जी के निम्न गीतों में नारी की श्रृंगारिक भावना को दर्शाया है जिनमें उनको शारीरिक संवेदना से ऊपर उठकर विशुद्ध मानस भूमि पर प्रस्तुत किया है -

"रंग भरी किस अंग भरी हो
गात हरी किस हाथ बरी हो,
जीवन के जागरण - शयन की,
श्याम अरुण सित - तरुण - नयन की
गन्ध - कुसुम - शोभा उपवन की,
मानस मानस में उतरी हो
जीवन - जो बन से संवरी हो ।"[3]

"तन की, मन की, धन की हो तुम
काम कामिनी कभी नहीं तुम,
सहज स्वामिनी सदा नहीं तुम,
स्वर्ग - दामिनी नदी बही तुम
अयन नयन - नयन की हो तुम ।"[4]

इसी प्रकार 'स्नेह की सरिता के तट पर' वाले गीत में भी अभिसारिका का चित्रण है जो दो कमल जैसे घट भरे हुए सरिता के तट पर अपने प्रिय से मिलने जा रही है। गीत के दूसरे चरण में कवि उसे सम्बोधित करते हुए प्रणय पीड़ित प्रिय की अदम्य पिपासा को अपने मधुर स्नेह जल के द्वारा शान्त कर उसे पूर्ण रूप से अपनाकर उसका सारा दुःख हरण करने को प्रेरित करता है जैसे -

"स्नेह की सरिता के तट पर
चल रही युगल कमल घट भर
नयन ज्योति में ज्ञान अकम्पित
चली जा रही नत मुख विकसित
जीवन के पथ पर अविचल - चित
छवि अपार सुन्दर

- - -

तृष्णाकुल होंगे प्रिय, जाओ
सलिल स्नेह मिल मधुर पिलाओ
सब दुख श्रम हर लाज रूप धर
अपनाओ सत्वर ।"[5]

इनके अतिरिक्त 'नयनों के डोरे लाल गुलाल भरे खेली होली' में उद्दाम श्रृंगार का चित्रण है। 'मार दी तुझे पिचकारी' में फूल सी देह वाली प्रभा की

साड़ी पहने हुए हल्की तूलिका से संवारी हुई नायिका का सौन्दर्य चित्रण है। इस तरह गीतिका में अधिकांशत: श्रृंगारिक गीत ही हैं। इसी प्रकार परिमल, अनामिका, अर्चना, अणिमा तथा गीतगुंज में भी श्रृंगारिक गीतों की संख्या दिखाई देती है। आराधना में श्रृंगारिक गीतों की संख्या कम है। इसकी केन्द्रवृत्ति अध्यात्म है। अत: यह कहा जा सकता है कि निराला जी की श्रृंगारिकता में शुद्ध भावनाओं का मादक प्रसार है तथा वह श्रृंगारिक रूप में एक सफल कवि कहे जाते हैं।

<u>प्रकृति सम्बन्धी गीत</u> :- हिन्दी साहित्य में निराला जी अपने 'प्रकृति सौन्दर्य गीतों' के लिये विशेष्ष रूप से प्रसिद्ध हैं। निराला जी का प्रकृति चित्रण विशेष्ष रूप से ऋतुओं, वस्तुओं, प्रतीक विधान एवं अलंकरण रूप में ही देखने को मिलता है। निराला जी ने प्रकृति में अपनी आस्था को व्यक्त किया है जैसे -

"बौरे आम की भौंरे बोले,
प्रात कि गात पात के तौले,
सरसाई समीर मधुवर की
आँखों छबि आई आनन की
आलस दूर हुआ, मन भाया
चिड़ियों ने सुख के मुख खोले।"[६]

निराला जी ने अपने काव्य में प्रकृति के सुन्दर एवं मनोहर चित्रों को अभिव्यक्त किया है। ऋतु कविताओं की दृष्टि से निराला जी का विशेष्ष आकर्षण वर्षा ऋतु तथा वसन्त ऋतु पर ही रहा है जैसे - 'सखि वसन्त आया' इस गीत की गणना निराला के सर्वोत्कृष्ट गीतों में की जाती है। प्रकृति के मानवीकरण का सुन्दर रूप यहाँ देखने को मिलता है। वसंत ऋतु का आगमन होते ही वन की शोभा में एक नवीन उल्लासपूर्ण वातावरण दिखाई देता है जैसे -

" सखि वसन्त आया,
भरा हर्ष वन के मन
नवोत्कर्ष छाया,
किसलय - वसना नव - वय - लतिका
मिली मधुर प्रिय - उर - तरु - पतिका,
मधुप - वृन्द बन्दी
पिक स्वर नभ सरसाया । "[7]

इसके अतिरिक्त अनामिका से लेकर सांध्य काकली तक उनके सभी संग्रहों में वर्षा-ऋतु की कविताएँ बिखरी पड़ी हैं । " परिमल " में " दूत अलि ऋतुपति के आये ", में वसंत ऋतु का बहुत ही सुन्दर रूप से वर्णन किया गया है । " वह चली - अब अलि शिशिर समीर " में शिशिर काल की पृथ्वी का अश्रुसिंचित चित्र है । निराला जी की सभी काव्य रचनाओं में प्रकृति चित्रण सम्बन्धी गीत दिखाई देते हैं ।

<u>मानवतावादी गीत</u> :- निराला जी कला के पुजारी रहे हैं और कला के क्षेत्र में उन्होंने आरम्भ से ही विद्रोह किया था । निराला जी ने जीवन में स्वयं पिसकर तथा दूसरों को पिसते हुए देखकर विद्रोह का ऐसा नवीन स्वर छेड़ा जिसमें कला की मादक लहरों के स्थान पर जीवन की विषमता के नये तीखे स्वर कर्कश स्वर में बज उठे । इस प्रकार के नये काव्य को आलोचकों ने युद्धकालीन कविता, नई कविता, कविता की नवीन गतिविधि आदि कहा है । इस प्रकार के काव्य का सृजन कर निराला शोषितों के हिमायती तथा प्रगतिशील कवियों के कर्ता धर्ता बन गये और उनका सम्पूर्ण जीवन मानवतावादी रूप में रूपान्तरित हो गया ।

विश्व मानव का प्रतिनिधि भारतीय मानव ही है । इस राष्ट्रीय - भावना का उल्लेख करते हुए निराला जी ने अपने गीतों में आज के मनुष्य जीवन के विकृतियों का व्यंग्यात्मक चित्रण प्रस्तुत किया है, उदाहरणस्वरूप जैसे -

"मां अपने आलोक निखारो,
नर को नरक - त्रास से वारो ।
विपुल दिशावधि शून्यवर्गजन,
व्याधि शयन जर्जर मानव मन,
ज्ञान गगन से निर्जर जीवन
करुणा करो उतारो, तारो ।"[८]

निराला जी ने सत्ताधारियों पर जैसे नेताओं, ठेकेदारों, धर्म के प्रचारकों पर अभिमानी लोगों पर भी व्यंग्य किया है जैसे -

"मेरे पड़ोस के वे सज्जन
करते प्रतिदिन सरिता सज्जन
झोली से पुए निकाल लिए
बढ़ते कपियों के हाथ दिए
देखा भी नहीं उधर फिरकर,
जिस ओर रहा वह भिक्षु इतर,
चिल्लाया किया दूर दानव
बोला मैं धन्य श्रेष्ठ मानव ।"[९]

वे समस्त मानव जीवन को सम्पूर्ण रुप से प्रसन्नचित्त देखना चाहते हैं । एक आदर्शवादी व्यक्ति की तरह वे अपनी इच्छा प्रकट करते हैं -

"दूर हो अभिमान, संशय
वर्ण - आश्रम - गत महामय
जाति जीवन हो निरामय,
वह सदाशयता प्रखर हो ।"[१०]

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि निराला जी मानवतावादी गीतकार हैं । "वैसे तो मानवतावाद का नारा लेकर प्राय: सभी छायावादी कवि चले हैं । परन्तु मानवतावाद की जो गहराई एवं शक्ति निराला - साहित्य में मिलती है,

वह अन्यत्र दुर्लभ है। इसका कारण यह है कि निराला का अन्यायी के प्रति आक्रोश एवं दीन-दुखियों के प्रति सहज निर्मल सहजानुभूति बौद्धिक न होकर सदैव व्यवहारिक रही है। निराला जी ने स्वयं सदैव जीवन के सभी प्रकार के संघर्ष झेले थे इसलिए वे जानते थे कि मानव जीवन साधारणतः कितना तिक्त होता है और साथ ही कितना मधुर भी। इसी कारण उनके काव्य में जीवन के तिक्त और मधुर रुपों के बड़े हृदयग्राही चित्रण मिलते हैं। हिन्दी - साहित्य में निराला और प्रेमचन्द दो ही कलाकार ऐसे हुए हैं जिनके सम्पूर्ण साहित्य में जीवन के इन दोनों रुपों का सुन्दर एवं यथार्थ चित्रण हुआ है।"[११]

शोक-गीत :- "सरोज - स्मृति" नामक शोक गीत हिन्दी-साहित्य जगत का सर्वश्रेष्ठ शोक गीत माना जाता है। निराला जी ने अपनी उन्नीस वर्षीय विवाहिता पुत्री सरोज के निधनोपरान्त दुःखी होकर इस कविता की रचना की थी। सरोज की मृत्यु के समय निराला जी ने स्वयं को उसका उचित उपचार कराने में असमर्थ पाया था। अतः वह वेदनाओं से घिर चुके थे और उनकी वह सघन वेदना सरोज-स्मृति के रुप में हिन्दी-साहित्य की अमर निधि बन गई। इस सम्पूर्ण गीत में वेदना और शोक के भाव अभिव्यंजित हैं। कवि ने इस शोकगीत में अपनी असमर्थता को प्रकट किया है तथा पुत्री की आत्मा को सम्बोधित करते हुए कहा है -

"धन्ये मैं पिता निरर्थक था,
 कुछ भी तेरे हित कर न सका,
जाना तो अर्थागमोपाय,
 पर रहा सदा संकुचित काय,
लख कर अनर्थ आर्थिक पथ पर
 हारता रहा मैं स्वार्थ-समर।"[१२]

निराला जी अन्त में तर्पण करते हुए कहते हैं :-

"कन्ये गत कर्मों का अर्पण
कर, करता मैं तेरा तर्पण ।"[13]

अपने संघर्षमय जीवन का चित्रण करते हुए उन्होंने लिखा है -

"दुःख ही जीवन की कथा रही
क्या कहूँ आज जो नहीं कही ।"[14]

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि 'सरोज - स्मृति' एक मार्मिक एवं आदर्शवादी शोक-गीत है ।

<u>प्रगतिशील एवं प्रयोगशील गीत</u> :- निराला जी के जीवन में दुःख, संघर्ष, विद्रोह तथा मृत्यु - यह क्रम निरन्तर चलता ही रहा । "जीवन में जहाँ संघर्ष है, परिवेश का सशक्त विरोध है, उसके साथ सामना करने वाले व्यक्ति विरुद्ध परिस्थिति में भी गीत गाने का सामर्थ्य रखते हैं ।"[15] जैसे -

"कठिन शृंखला बजा - बजाकर
गाता हूँ अतीत के गान,
मुझ भूले पर उस अतीत का
क्या ऐसा ही होगा ध्यान ।"[16]

मानव जीवन अनेक रूपों में विभक्त होने के कारण मानव मन बहुत दुःखी हो रहा है । जब तक मनुष्य ऐसा रहेगा, तब तक उन्हें नरक त्रास भुगतना ही होगा । इस तकलीफ से बचने के लिये निराला जी मार्ग दर्शन करते हैं :-

"पथ पर बेमौत न मर
श्रम कर तू विश्रम - कर,
उठा - उठाकर दशार्थ,
दे दे तू वरद साथ,

जग के इस सजग प्रात

पात - पात किसे भर । "१७

जब निराला जी आधुनिक विश्व समाज में सहयोगी आदर्श का परिचय नहीं पाते, तब वे खीझ उठते हैं और इस प्रकार के भाव व्यक्त करते हैं -

"मानव जहाँ बैल - घोड़ा है,
कैसा तन - मन का जोड़ा है ?
किस साधन का स्वांग रचा यह,
किस बाधा की बनी त्वचा यह
देख रहा है विज्ञ आधुनिक
वन्य भाव का यह कोड़ा है ।
इस पर से विश्वास उठ गया,
विधा से जब मेल छूट गया,
पक - पक कर ऐसा फूटा है,
जैसे सावन का फोड़ा है । "१८

इसी प्रकार प्रयोगात्मक शैली का रूप निराला जी की निम्न पंक्तियों में मिलता है जैसे -

"ऊँट बैल का साथ हुआ है,
कुत्ता पकड़े हुए जुआ है,
यह संसार सभी बदला है
फिर भी नीर वही गँदला है
जिससे सिंचकर ठंडा हो तन,
उस चित्त जल का नहीं सुआ है
रूखा होकर ठिठुर गया है
जीवन लकड़ी का लड़का है
खोले कोंपल, फले फूल कर
तरु - तल वैसा नहीं हुआ है । "१९

आत्म परक गीत :- कवि के व्यक्तिगत जीवन के सुख - दुःख, आशा-निराशा, जय - पराजय आदि की अभिव्यक्ति करने वाले गीतों को इस वर्ग में रखा गया है ।

आत्मपरक गीतों की शृंखला " अणिमा " से प्रारम्भ होती है । " मैं अकेला " में कवि बहुत ही अकेलेपन का अनुभव करता हुआ कहता है -

"" मैं अकेला,
देखता हूँ, आ रही
मेरे दिवस की सान्ध्य बेला
पके आधे बाल मेरे,
हुए निष्प्रभ गाल मेरे,
चाल मेरी मन्द होती आ रही,
हट रहा मेला । ""[20]

निराला जी ने अपनी शारीरिक क्षीणता और मानसिक व्याधियों का वर्णन भी अपने गीतों में किया है । " स्नेह निर्झर बह गया है " में भी इसी मनःस्थिति का वर्णन देखने को मिलता है । निराला जी अन्तिम दिनों में शारीरिक एवं मानसिक व्याधियों से पीड़ित थे । वे ठीक से हाथ भी हिला नहीं सकते थे । इस गीत में करुण रस की प्रधानता है - जैसे -

"" भग्न तन, रुग्ण मन,
जीवन विषण्ण वन
क्षीण क्षण - क्षण देह
जीर्ण सज्जित गेह
घिर गए हैं मेह
प्रलय के प्रवर्षण
चलता नहीं हाथ
कोई नहीं साथ,

उन्नत, विनत माथ
दो शरण, दो शरण।" [21]

निराला जी ने अपने काव्य में अपनी आत्म व्यथा का वर्णन किया है तथा उसके साथ आत्मिक सुख शान्ति को भी दर्शाने का प्रयत्न किया है जैसे -

"आज मन पावन हुआ है
जेठ में सावन हुआ है
अभी तक दृग बन्द थे ये
खुले उर के छन्द थे ये,
सजल होकर बन्द थे ये,
राम अहि रावण हुआ है।" [22]

" जननि, मोहमयी ... तमिस्त्रा दूर मेरी हो गई है
विश्व जीवन की विविधता एकता में खो गई है।" [23]

<u>राष्ट्रीय गीत :-</u> निराला जी के देश प्रेम का स्वर उनकी अनेक, कविताओं में मुखरित हुआ है। 'गीतिका' का 'भारती जय विजय करे' गीत निराला के राष्ट्रीय गीतों में सर्वश्रेष्ठ कहा जा सकता है जैसे -

" भारति जय विजय करे।
कनक शस्य कमल धरे।
लंका पदतल, शतदल
गर्जितोर्मि सागर जल,
धोता शुचि चरण युगल,
स्तव कर बहु अर्थ भरे।" [24]

इसी प्रकार " जला दे जीर्ण शीर्ण प्राचीन " में कवि राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत होकर भारत माँ से प्रार्थना करता है -

" जला दे जीर्ण - शीर्ण प्राचीन,
    क्या करूँगा तन जीवन हीन,
माँ, तू भारत की पृथ्वी पर,
    उतर रूपमय माया तन धर
देवव्रत नरवर पैदा कर
    फैला शक्ति नवीन । " २५

इसी प्रकार " जागो फिर एक बार " में कवि ने भारतवासियों को फिर से जगाया है यह जागरण या उद्बोधन गीत है जिसमें राष्ट्रीय भावना का सन्देश छिपा हुआ है जैसे -

" तुम हो महान,
    तुम सदा हो महान,
है नश्वर यह दीन भाव,
    कायरता, कामपरता
ब्रम्हा हो तुम,
    पदरज भर भी है नहीं,
पूरा यह विश्व भार
    जागो फिर एक बार । " २६

<u>रहस्यवादी - गीत</u> :- निराला जी के गीतों में परोक्ष सत्ता की व रहस्यात्मक अनुभूतियों का चित्रण भी मिलता है । उनके इस प्रकार के गीतों में अलौकिक की अभिव्यक्ति लौकिक का आधार लेकर हुई है । उनके काव्य में रहस्यवाद का जितना भी चित्रण हुआ है वह स्वाभाविक और मनोरम है । उनके रहस्यवाद में आध्यात्मिक चिन्तन का प्राधान्य है । निराला जी ने प्रकृति को भी रहस्यवादी दृष्टि से देखा है ।

उनकी " तुम और मैं " कविता में यही रहस्य भावना प्रकट हुई है जैसे -

"" तुम तुंग - हिमालय श्रृंग,
    और मैं चंचल गति सुर सरिता,
तुम विमल हृदय उच्छवास
    और मैं कान्त कामिनी कविता । ""[२७]

प्रारम्भिक दार्शनिक गीतों में वह अधिक मृदुल हैं । " पंचवटी प्रसंग " में लक्ष्मण की आदर्शवादी सेवा का उल्लेख करते हुए वे कहते हैं -

"" कौन तम के पार (रे कह)
    कौन तम के पार । ""[२८]

यह जिज्ञासा की भावना रहस्यवाद का प्रथम सोपान मानी जाती है । एक कण के निरीक्षण से न जाने कितने प्रश्न कवि के हृदय में उठते हैं और वे आश्चर्य चकित होकर कहते हैं :-

"" तुम हो अखिल विश्व में,
    या यह अखिल विश्व है तुम में,
अथवा अखिल विश्व तुम एक,
    यद्यपि देख रहा हूं तुम में भेद अनेक,
पाया हाथ न अब तक इसका भेद,
    सुलझी नहीं ग्रंथि मेरी, कुछ मिटाने खेद । ""[२९]

अपने अन्त की दार्शनिक रचनाओं में निराला जी मनुष्य की जिज्ञासा को मानवीय भूमि पर ले जाते हैं -

"" पार पारावर जो है
    स्नेह से मुझको दिखा दो,
रीति क्या, कैसे नियम,
    निर्देश कर, कर के सिखा दो ।
कौन से जन, कौन जीवन

कौन मे गृह, कौन आँगन,
किन तनों की छाँह के तन,
मान मानस में लिखा दो ।
पठित या निष्पादित वे नर,
देव या गन्धर्व किन्नर,
लाल, पीले, कृष्ण, धूसर
भजन क्या भोजन विखा दो । "[30]

भक्ति प्रधान और विनय के गीत : निराला जी के भक्ति प्रधान गीतों की संख्या पर्याप्त वृहद है । इन गीतों के अन्तर्गत उनके वंदना और प्रार्थना के गीत एवं आत्म निवेदनपूर्ण गीत आते हैं । प्रार्थना और विनय के गीत हमें " परिमल " संग्रह से ही मिलने लगते हैं । आगे चलकर कुकुरमुत्ता एवं नये पत्ते में इस प्रकार के गीत नहीं मिलते परन्तु आराधना " एवं " अर्चना " में अधिकांश मात्रा में इस प्रकार के गीत दिखाई देते हैं । सिर्फ " अर्चना " में ३५ गीत शरणागति के संगृहीत हैं । कुछ थोड़े गीत " गीतगुंज " एवं " सांध्य काकली " में भी मिलते हैं । निराला जी ने " अर्चना " की भूमिका में लिखा है - " इनका अन्तरंग विषय यौवन से अतिक्रान्त कवि के परलोक से सम्बद्ध है, इसलिए यहाँ सम्पत्ति का फल निष्काम में हो होगा । "[31]

निराला जी को भगवान पर बहुत आस्था थी इसलिए वह भगवान के गुणों की प्रशंसा करते हुए कहते हैं -

" तन, मन, धन, वारे हैं
परम, रमण, शाप शमन
स्थावर जंगम - जीवन
उद्दीपन, संदीपन
सुनयन रतवारे हैं । "[32]

कहीं कहीं निराला जी ने प्राचीन भक्त कवियों की तरह भक्ति गीत भी लिखे हैं जिनमें भजन, कीर्तन तथा जप आदि के भाव परिलक्षित होते हैं :-

"हरि का मन से गुणगान करो,
तुम और गुमान करो, न करो
स्वर गंगा का जलपान करो
तुम अन्य विधान करो, न करो
निशिवासर ईश्वर ध्यान करो
तुम अन्य विमान करो, न करो।"[33]

* * *

"काम रूप हरो काम,
जपूँ नाम, राम राम।"[34]

निराला जी ने अपने गीतों में राम और कृष्ण की छवि का वर्णन किया है। सूरदास की भाँति निराला जी भी कृष्ण को समस्त रूपों में व्याप्त मानते हैं जैसे -

"जिधर देखिए, श्याम विराजे,
श्याम कुंज, वन, यमुना श्यामा,
श्याम गगन, घन - वारिद गाजे,
श्याम धरा, तृण - गुल्म श्याम हैं
श्याम सुरभि, अंचल दल साजे।"[35]

इसी प्रकार "राम के हुए तो बने काम" में - राम के शरण में जाने से समस्त, धन, धान एवं धाम के सँवर जाने की बात कवि कहता है। वेदों में भी सत्य के रूप में प्रतिष्ठित वही राम हैं जिन्होंने सूर्यवंश में जन्म लिया था जैसे -

" राम के हुए तो बने काम,
सांवरे खारे धन, धान, धाम
पूछा जग ने, वह राम कौन ?
बोली विशुद्धि जो रही मौन
वह जिसके दून, न दयाँढ़ पौन
जो वेदों में है सत्य-साम । "[36]

"विपदा हरण हार हरि हे करो पार" में कवि बड़ी व्याकुलता से उद्धार करने की प्रार्थना अपने भगवान से करता है जैसे -

" विपदा हरण हार, हरि हे करो पार,
प्रणव से जो कुछ चराचर तुम्ही सार । "[37]

अत: यह कहा जा सकता है कि निराला जी एक सफल भक्ति कवि हैं ।

हास्य और व्यंग्य गीत :- निराला के गीतों में व्यंग्य का प्रयोग सर्वाधिक हुआ है । उनके व्यंग्य में सत्य की आत्मा, निर्भीकता का शरीर, हास्य का भीना वस्त्र और असत्य पर प्रहार करने की पूर्ण क्षमता होती है । गम्भीरता मार्मिकता एवं तीक्ष्णता उनके व्यंग्य की विशेषतायें हैं । कहीं कहीं उनके गीतों में व्यंग्य के साथ साथ हास्य भी दिखाई देता है परन्तु ऐसे व्यंग्यों की संख्या बहुत कम हैं, इसका कारण यह है कि उनके व्यंग्य समाज, धर्म, राजनीति और साहित्यिक आदि विषयों से संबंधित हैं तथा इनमें आक्रोश एवं घृणा अधिक पाई जाती है तथा हास्य की गुंजाइश कम रहती है । निराला जी को राजनीतिक ढोंग अच्छे नहीं लगते थे इसलिये उन्होंने राजनीतिक लोगों पर व्यंग्य किया है -

" लक्षपति का भी यदि कुमार,
होता मैं, शिक्षा पाता अरब समुद्र पार,
देश की नीति के मेरे पिता परम पण्डित,
एकाधिकार रखते भी धन पर, अविचल चित्त,
होते उग्रतर साम्यवादी करते प्रचार,
चुनती जनता राष्ट्रपति उन्हें ही सुनिर्धार । "[38]

व्यंग्य की दृष्टि से "कुकुरमुत्ता" निराला जी की एक सफल काव्य कृति है। इसमें पूंजीवादी व्यवस्था पर जोरदार व्यंग्य किया है। "कुकुरमुत्ता" सर्वहारा वर्ग का प्रतीक है और "गुलाब" पूंजीपति वर्ग का। निराला ने शोषक पूँजीपति वर्ग की "कुकुरमुत्ता" द्वारा भर्त्सना कराई है -

" अबे सुन बे गुलाब,
भूल मत जो पाई खुशबू रंगों आब,
खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट,
डाल पर इतराता है कैपिटलिस्ट
बहुतों को तूने बनाया गुलाम,
माली कर रखा, खिलाया जाड़ा घाम।"[39]

इसके अतिरिक्त "पंचवटी प्रसंग" में सूर्पणखा के चित्रण में गुप्त हास्य की जो झलक है वह निम्न है -जैसे -

"छूट जाता है धैर्य ऋषि मुनियों का,
देवी - भोगियों की तो बात ही निराली है।"[40]

इसी प्रकार "रानी और कानी" में लेखक का यथार्थवादी दृष्टिकोण है जिसमें सामान्य मानव के सुखात्मक एवं दुखात्मक अनुभवों का चित्र उपस्थित् किया गया है। इसमें हास्य एवं विनोद के सहारे जो व्यंग्य उपस्थित् किया गया है वह मार्मिक है। रानी के रुप चित्रण की "कुरुपता में रानी के हृदय की भावनायें छिपी हैं जो विवाह की समस्या बनकर उसकी माँ को सदैव चिन्ता का कारण बन गई। जैसे -

" चेचक के दाग, काली, नाक चपटी
गंजा सर, एक आंख कानी,
रानी, अब हो गई सयानी"

फिर भी माँ का दिल बैठा रहा

सोचती रहती दिन रात

कानी की शादी की बात ।"[41]

इसमें समस्या साधारण भी है और विशेष भी । अतः इसमें व्यंग्य का सामाजिक पक्ष स्पष्ट होता है ।

निराला जी का "कुकुरमुत्ता" ही एक ऐसा काव्य संग्रह है जो हास्य एवं व्यंग्य की दृष्टि से सफल कृति है । धनंजय वर्मा ने अपनी पुस्तक निराला काव्य और व्यक्तित्व में ठीक ही कहा है कि "कुकुरमुत्ता असफलता नहीं, व्यंग्य की सफलता है । मेरी दृष्टि में कुकुरमुत्ता का व्यंग्य विविध क्षेत्रीय एवं तीव्र है । जो भी वर्ग कुकुरमुत्ता के प्रति मोह दिखाकर अपना प्रतीक मानेगा, वही व्यंग्य का शिकार होगा । इस रचना के पीछे कोई असाधारण प्रतिभा और लक्ष्य कार्य कर रहा है ।"[42]

निराला जी सरल भाषा में तथा बोलचाल की भाषा में व्यंग्य करते हैं यही उनकी विशेषता है । इस प्रकार निराला जी के काव्य में हास्य और व्यंग्य प्रचुर मात्रा में दिखाई देता है ।

<u>स्फुट गीत</u> :- निराला जी के स्फुट गीतों में उनकी गजलें और उनके यथार्थवादी गीतों को लिया जा सकता है । "बेला" की पहली चौथी, ग्यारवीं, तेरहवीं, चौदहवीं, सातवीं और अठारहवीं संख्या की गजलें रहस्यात्मक भावना से ओतप्रोत है । तीसरी, सातवीं, आठवीं, नवीं, इक्कीसवीं, और सत्ताइसवीं संख्या वाली गजलों में श्रृंगार - भावना की झलक दिखाई देती है । यथार्थवादी गीतों में "खेत जोत कर घर आये हैं", "भरी तन की भरन", "धान कूटता है" की गणना हो सकती है जैसे -

"खेत जोत कर घर आये हैं

बैलों के कन्धों पर माची,

माची पर उलटा हल रक्खा

बढ़ी हाथ, अधेड़ पिता जी

माता जी, सिर गट्ठल पड़ा

पिता गये गाँवों के गाँड़े

माता घर, लड़के घाये हैं । "[42]

इसके अतिरिक्त प्रयोगशील गीतों में " जिनकी नहीं मानी कान ", " खुल कर गिरती है ", " लिया दिया तुमसे मेरा था ", " नील जलधिजल, " गवना न करना " " तपन से घन मन शयन से " और " अरघान की फैल ", " छलके छलके पैमाने क्या ", " ऊँट बैल का साथ हुआ है ", " मंहगी साड़ी ", " खिरनी के पेड़ तले ", " रंग गये साँवले नयन अली के । "[44] इत्यादि गीत स्फुट कविताओं के अन्तर्गत आते हैं । निराला जी का परवर्ती-काव्य इस दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण है । आराधना में ऐसे गीत अधिक दिखाई देते हैं ।

रस की दृष्टि से गीतों का वर्गीकरण :-

काव्य में रस का महत्वपूर्ण स्थान है । रसास्वादन, काव्याध्यन का परम उद्देश्य है । इस रस को काव्य रूपी शरीर का प्राण माना गया है । वस्तुत: रस मानस की एक स्थिति है । इसकी निष्पत्ति के सम्बन्ध में आचार्य भरत ने लिखा है - " विभावानुभाव संचारी, संयोगात रस निष्पत्ति : । आचार्य मम्मट ने भी रस के सम्बन्ध में इसी प्रकार कहा है -

कारणान्यथ कार्याणि सहकारीणि यानि च

रत्यादे: स्थायिभावो लोकोनानि चेन्नाट्य काव्ययो:

विभावा अनुभावास्तत् कथ्यन्ते व्याभिचारिण:

व्यक्त: स तैर्विभावाद्यै: स्थायि भावो रस: स्मृत:

अर्थात " " लोक में रति आदि रूप स्थायी भाव के जो कारण - कार्य और सहकारी होते हैं, वे यदि नाटक या काव्य में होते हैं तो क्रमश: विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी भाव कहलाते हैं और उन विभाव आदि से व्यक्त वह स्थायी भाव " रस " कहलाता है । "[45]

इस प्रकार विभाव, अनुभाव, संचारी भाव तथा स्थायी भाव के संयोग से रस निष्पत्ति होती है। कुछ विद्वानों ने विभाव के कारण ही रस की निष्पत्ति स्वीकारी है। इनका कहना है कि मानव के अभिनय प्रक्रिया के कारण हम बार बार आलम्बन का ही चिन्तन करने लगते हैं। इसी बार बार के चिंतन से हमें आनन्द मिलता है, अतएव विभाव ही रस है किन्तु यह विचार करने योग्य है कि आलम्बन विभाव, चेतन अथवा जड़ समुदाय में से ही कुछ होगा। ये जड़ चेतन सभी मनुष्यों के भाव के अनुसार समय समय पर भिन्न भिन्न रूप में प्रतीत होने लगते हैं। तात्पर्य यह है कि व्यक्ति की दृष्टि से आलम्बन का महत्व होता है और इस का सम्बन्ध आत्मा से होता है। अत: मात्र विभाव के कारण रस निष्पत्ति नहीं हो सकती। इसी प्रकार अनुभाव, संचारी भाव से भी रस निष्पत्ति नहीं हो सकती, वरन् सबके सम्मिलित रूप के कारण ही रस की निष्पत्ति होती है।

आचार्य भरत ने रस के भेदों पर भी विचार किया है। इन्होंने श्रृंगार, रौद्र, वीर तथा वीभत्स नामक चार मूल रस मानते हैं और इन्हीं चार रसों से अन्य चार रस की उत्पत्ति बतायी गई है। नवें रस "शान्त" को बाद में स्वीकार गया है। आधुनिक साहित्य में यही नौ रस माने गये हैं। इनके अतिरिक्त भक्ति और वात्सल्य रस को भी कई विद्वानों ने माना है। अब हम यह देखेंगे कि निराला काव्य में इन रसों की स्थिति किस रूप में विद्यमान हैं अर्थात् निराला जी के काव्य को रस की दृष्टि से वर्गीकृत करेंगे।

(१) <u>श्रृंगार रस</u> :- इसे रसराज कहा गया है। इसका स्थायी भाव रति है। उत्तम -प्रकृति, युवक-युवती की रति ही श्रृंगार का वर्ण्य विषय है। "श्रृंगार शब्द की व्युत्पत्ति "श्रृंग" तथा "आर" इन दो शब्दों के संयोग से हुई है। "श्रृंग" का अर्थ है कामोद्वेग और "श्रृंग" धातु से निष्पन्न "आर" शब्द गत्यर्थक है। अत: कामोद्वेग की प्राप्ति श्रृंगार का विषय हुआ।"[४६]

श्रृंगार – रस सभी रसों में तीव्र तथा प्रभावशाली है इसके सन्दर्भ में बाबू गुलाबराय ने लिखा है – "इस – रस की तीव्रता, विस्तार, सत्य और प्रभावशीलता अन्यान्य सभी रसों से बढ़ी चढ़ी है।"[47] वस्तुत: "यह रस अपनी व्यापकता, गम्भीरता एवं उत्तमता के कारण सर्वश्रेष्ठ कहलाता है। इस रस की उत्पत्ति तब होती है जब प्रेमिकाओं के मन में संस्कार रूप से वर्तमान रति या प्रेम रसावस्था को पहुँचाकर आस्वादन की योग्यता प्राप्त करता है।"[48]

नायक और नायिका को विद्यमानता से संयोग – श्रृंगार उत्पन्न होता है और इनमें से किसी एक के अनुपस्थिति से श्रृंगार, विप्रलम्भ का रूप धारण कर लेता है। इस प्रकार श्रृंगार के यह दो भेद संयोग और वियोग हो जाते हैं। निराला काव्य में श्रृंगार के दोनों भेद अपनी गहराई के साथ चित्रित हैं।

निराला जी मुख्यत: विद्रोही कवि थे परन्तु पत्नी के प्रेम में डूबकर उन्होंने जिस काव्य की रचना की, वह प्रेम से ओतप्रोत है। उनकी प्रथम रचना 'जुही की कली' थी। यह संयोग श्रृंगार का उत्कृष्ट उदाहरण है। इसकी रचना कवि ने पत्नी की मृत्यु के बाद की। इस रचना के सम्बन्ध में डा० रामविलास शर्मा का कथन है –

"परिमल का कवि वेदना का कवि होकर नहीं रह जाता, वह प्रेम और सौन्दर्य का कवि है। उसे स्वर्गीया प्रिया की याद आती है। वह देखता है कि कली अपने लावण्य से समस्त वन को लुभा लेती है और भ्रमर का गीत उसकी गंध में मिलकर एक हो जाता है। वह स्वयं वासना और सौन्दर्य के द्वार पर गुंजार करता हुआ कवि है कितनी ही रचनाओं में खोयी हुई प्रिया को जगाने या उसके बन्द द्वार खुलने का भाव आया है।"[49]

संयोग – श्रृंगार का उत्कृष्ट उदाहरण यह है इसमें पति-पत्नी के सम्भोग श्रृंगार का वर्णन है। मिलन की रात्रि है, दीपक का धुंधला प्रकाश है जैसे –

"" नयनों के डोरे लाल, गुलाल भरे खेली होली,
जागी रात सेज प्रिय पति, संग रति स्नेह रंग घोली,
दीपित दीप प्रकाश, कंज छवि, मंजु मंजु हँस खोली,
मली मुख चुम्बन रोली।""[50]

निम्नलिखित उदाहरण में भी श्रृंगार रस के सभी भाव विद्यमान हैं :-

"" घेर अंग अंग को
लहरी तरंग वह प्रथम तारुण्य की,
ज्योतिर्मयि लता सी हुई मैं तत्काल
घेरि निज तरु - तन,
खिले नव पुष्प जग प्रथम सुगन्ध के
प्रथम वसन्त में गुच्छ गुच्छ
दृगों को रंग गई प्रथम प्रणय रश्मि
चूर्ण हो विच्छुरित।""[51]

इसके अतिरिक्त "सखि वसन्त आया", "बह चली अब अलि शिशिर समीर", "पावन करो नयन," "मेरे प्राणों में आओ", "दृगों की कलियाँ नवल खुली", "कल्पना के कानन की रानी" "कौन तुम शुभ्र किरण वसना", "प्यार करती हूं अलि इसलिये मुझे भी करते हैं वे प्यार", "स्नेह की सरिता के तट पर", "मेघ के घन केश", "रंग गई पग पग धन्य धरा", "मार दी तुझे पिचकारी", "तुम्हें ही चाहा सौ सौ बार", "भावना रंग दी - तुमने प्राण", सकल गुणों की खान प्राण तुम", "चाहते हो किसको सुन्दर", "चहकते नयनों में जो प्राण", "नयनों का नयनों से बन्धन", "खुलती मेरी शेफाली", "हंसती री - डाली डाली", "द्रुत अलि ऋतुपति के आये आदि इसी प्रकार श्रृंगार का विप्रलम्भ पक्ष भी निराला काव्य में चित्रित है। "" विरह दग्ध तो कवि का अपना हृदय भी रहा। अतः उसका विरह वर्णन अधिक मार्मिक बन पड़ा है।""[52]
"तुलसीदास" नामक काव्य कृति से एक उदाहरण प्रस्तुत है :-

"वह आज हो गई दूर तान,
इसलिए मधुर वह और गान,
सुनने को व्याकुल हुए प्राण प्रियतम के
छूटा जग का व्यवहार ज्ञान,
पग उठे उसी मग को अजान,
कुल - मान - ध्यान शलथ स्नेह
दान सदाम से ।"[53]

इसके अतिरिक्त "तुम छोड़ गये द्वार तब से यह सूना संसार", "एक ही आशा में सब प्राण", "मुझे स्नेह क्या मिल न सकेगा", "प्राण धन को स्मरण करते नयन झरते नयन झरते", "बुझी दिल की न लगी मेरी तो क्या तेरी बात बनी", "प्यार की थाती यह पाती प्रिया आँखों से बरसाती" "दु:ख के सुख जियो पियो ज्वाला", "जीकर जो प्राण न मार सके", "ये दु:ख के दिन काटे हैं जिसने", "मुसीबत में कटे हैं दिन, मुसीबत में कटी रातें", "किनारा वो हमसे किये जा रहे हैं," "आँख के आँसू न शोले बन गये तो क्या हुआ" इत्यादि कवितायें भी विप्रलम्भ श्रृंगार के अन्तर्गत ही आती हैं ।

२- वीर रस :- वीर रस के सम्बन्ध में आचार्य भरत ने लिखा है - "उत्साहोनाम उत्तम प्रकृति: ।"[54] अर्थात् वीर रस का स्थायी भाव उत्तम प्राकृतिक उत्साह होता है । "उत्साह" शब्द को स्पष्ट करते हुए शारदातनय ने लिखा है - "उत्साह: सर्वकृत्येषुसत्वरा मानसी क्रिया अर्थात् किसी कार्य के सम्पन्न करने के क्रम में हमारे मानस में एक विशेष प्रकार की सत्वर क्रिया सजग रहती है, वही उत्साह है । वीर-रस के सन्दर्भ में सेठ कन्हैयालाल पोद्दार ने लिखा है । वीर रस का अत्यन्त उत्साह से प्रादुर्भाव होता है ।"[55] "उत्साह से प्रादुर्भाव होने वाले वीर के चार भेद किये गये । युद्ध वीर, दान वीर, दया वीर तथा धर्म वीर ।"[56]

निराला काव्य में युद्ध वीर और दया वीर के चित्रण अत्याधिक हुए हैं । युद्ध वीर का एक उदाहरण है -

"तू कर्मी ने ले दूसरी आड़,

शत्रु को समर जीते पछाड़ ।"[५७]

इसी प्रकार "राम की शक्ति पूजा" में हनुमान के वीर रूप का वर्णन अत्यन्त प्रभावशाली है।

"गर्जित -प्रलयाब्धि - क्षुब्ध - हनुमत - केवल प्रबोध,

उद्गीरित - वह्नि - भीम पर्वत कपि चतुः प्रहर ।

* * *

"सेनापति दल - विशेष के, अंगद हनुमान

नल, नील, गवाक्ष, प्रात के रण का समाधान ।"[५८]

निराला जी का कहना है कि वीरता का स्थान मात्र युद्ध-भूमि ही नहीं वरन् कर्म क्षेत्र भी है। निराला जी का व्यक्तित्व दान वीर और दयावीर के गुण से पूर्ण रहा है। दीनों की पीड़ा को उन्होंने अपनी पीड़ा समझा है। निराला जी दुखियों को अपना धन तथा सहानुभूति दोनों वितरण करते रहे। "अधिवास" शीर्षक कविता में कवि ने दयावीर के रूप में स्वयं को प्रस्तुत किया है। इसी प्रकार "भिक्षुक", "विधवा", "तोड़ती पत्थर" जैसी कविताओं में समाज से लड़कर भी उनका दुःख दूर करने का कवि का उत्साह चित्रित है। इसके अतिरिक्त "शिवाजी का पत्र" में वीर रस प्रचुर मात्रा में दिखाई देता है। जैसे -

"वीर ! सर्दारों के सर्दार ! महाराज !

बहु जाति, क्यारियों के पुष्प पत्र दल भरे,

आन बान- शान वाला भारत उद्यान के

नायक हो, रक्षक हो,

वासन्ती सुरभि को हृदय से हर कर

दिगन्त भरने वाला पवन ज्यों

वंशज हो, चेतन अमल अंश

हृदयाधिकारी रवि कुल मणि रघुनाथ के ।"[५९]

इसी प्रकार " बादल राग " में कवि ने वीर रस का प्रयोग प्रकृति के माध्यम से करने का प्रयत्न किया है जैसे –

"बार बार गर्जन, वर्षण है मूसलधार
झूम झूम मृदु गरज गरज घन घोर ।"[60]

इसी प्रकार " जागो फिर एक बार " में वीर रस का वर्णन बहुत ही सुन्दर ढंग से किया है । सम्पूर्ण कविता में कवि ने काफी उत्साहित होकर कहा है कि –

"जागो फिर एक बार ।
समर अमर कर प्राण
गान गाए महा सिन्धु से
सिन्धु नद तीर वासी
सैन्धव तुरंगों पर
चतुरंग चमूसंग,
सवा सवा लाख पर
एक को चढ़ाऊँगा
गोविन्द सिंह निज
नाम जब कहाऊँगा
किसने सुनाया यह
वीर जन – मोहन अति
दुर्जय संग्राम – राग
फाग का खेला रण
बारहों महिनों में
शेरों की माँद में
आया है आज स्यार
जागो फिर एक बार ।"[61]

इस प्रकार निराला काव्य में वीर रस प्रचुर मात्रा में दिखाई देता है ।

३- करुण रस :-   करुण रस का स्थायी भाव शोक है । धनंजय ने करुण-रस के सन्दर्भ में लिखा है - "इष्ट नाशाद निष्टोप्ता शोकात्मा करुणोकतम्‌ ।"[६२] अर्थात् करुण रस या तो इष्ट नाश से होता है अथवा अनिष्ट की प्राप्ति से । "अनिष्ट की प्राप्ति का अर्थ यह नहीं है कि इष्ट वस्तु या व्यक्ति का सर्वथा नाश हो जाये अथवा केवल इष्ट वस्तु या व्यक्ति का ही अनिष्ट हो, अपितु उस वस्तु या व्यक्ति की हानि होने से भी करुण रस की उपस्थिति हो सकती है और उसके सम्बन्धी के स्वयं अनिष्ट ग्रस्त होने से भी । तात्पर्य यह है कि मोटे रुप में इष्ट नाश और अनिष्ट प्राप्ति ही करुण रस का लक्षण है ।"[६३]

करुण रस के स्थायी भाव शोक का प्रभाव व्यक्ति विशेष पर भिन्न-भिन्न रुप में होता है । धैर्यवान व्यक्ति विवेक और धैर्य से शोक सहन करता है । धैर्य धारण करने की दृष्टि से मध्यम कोटि का व्यक्ति शोक से ग्रस्त होकर मूर्च्छा की स्थिति को प्राप्त होता है अथवा रुदन करता है और इस दृष्टि से निम्न व्यक्ति या तो हाहाकार मचा देता है या फिर मृत्यु को समर्पित हो जाता है । शोक की स्थिति में व्यक्ति के हृदय पर जो करुणा का प्रभाव पड़ता है उसका बहुत ही मार्मिक ढंग से निराला ने प्रदर्शन किया है । कवि ने अपने जीवन में दुःख ही अधिक पाया ।

निराला - काव्य में सर्वाधिक करुण रस की छाया "सरोज-स्मृति" में दिखाई देती है । सम्पूर्ण कविता में उन्होंने अपनी पुत्री सरोज की याद में लिखी है जैसे -

"श्रावण नभ का स्तब्धान्धकार,
शुक्ला प्रथमा, कर गई पार
धन्ये, मैं पिता निरर्थक था,
कुछ भी तेरे हित न कर सका ।"[६४]

इसमें कवि ने अपनी असमर्थता प्रकट की है। इस तरह सम्पूर्ण कविता में "करुण रस" ही दिखाई देता है। इसके अतिरिक्त "दीन" नामक कविता में-

"सह जाते हो, उत्पीड़न की क्रिया सदा निरंकुश नग्न।"[65]

"विधवा" में "कौन उसको धीरज दे सके।"[66]

"जीवन चिरकालिक क्रन्दन", "भिक्षुक" नामक कविता में "मुट्ठी भर दाने को भूख मिटाने को, दुःखता रहता है अब जीवन" (आराधना), "भीख मांगता है अब राह पर (बेला), "वेश-रूखे अधर सूखे (बेला), "कमरख की-आँखें भर आई" इस प्रकार की दुःख पूर्ण कवितायें हैं जिनमें करुण रस का आभास होता है। इन कविताओं में कवि अपनी असमर्थता तथा निराशा प्रकट कर सकता है।

४- रौद्र - रस :- रौद्र रस का स्थायी भाव क्रोध है। जब व्यक्ति के इच्छा के विरुद्ध कोई कार्य होता है तब उसके मस्तिष्क में यह स्थिति उत्पन्न होती है किन्तु शोक करने पर नैराश्य भावना जागृत होती है जबकि क्रोध में ऐसा नहीं होता है। निराला में रौद्र रस का स्थायी भाव क्रोध प्राय: व्यंग्य के रूप में अभिव्यक्त हुआ है। समाज की रूढ़िवादिता पर कवि का क्रोध भयंकर रूप धारण कर लेता है, कवि लिखता है -

"ये कान्य कुब्ज कुल कुलांगर
खाकर पत्तल में करें छेद
इनके कर कन्या, अर्थ खेद
इस विष्मय बेलि में विष ही फल
यह दग्ध मरुस्थल, नहीं सुजल।"[67]

इसी प्रकार -

"कवि जीवन में व्यर्थ को व्यस्त
लिखता अबाध गति मुक्त छन्द
पर सम्पादक गण निरानन्द
वापस कर देते पद सत्वर
इसे एक पंक्ति दो में उत्तर ।"[६८]

अन्तत: यह कहना ही अधिक उपयुक्त होगा कि निराला का क्रोध ही व्यंग्य बनकर विस्तार पा सकता है । इसके अतिरिक्त "राम की शक्ति पूजा" में भी कहीं कहीं रौद्र रस देखने को मिलता है जैसे -

"प्रतिफल परिवर्तित व्यूह - भेद कौशल समूह
राक्षस विरुद्ध प्रत्यूह, क्रुद्ध - कवि विषम हूह ।"[६६]

"रावण - प्रहार दुर्वार विकल वानर दल बल ।"[७०]

इस प्रकार निराला काव्य में कहीं कहीं इस रस की छाया दिखाई देती है ।

५- वीभत्स रस :- वीभत्स रस का स्थायी भाव या तो घृणा है या जुगुप्सा । इस रस के आलम्बनात्मक विषय हैं दुर्गन्धपूर्ण पदार्थ जैसे माँस, रुधिर आदि उद्दीपन हैं । दुर्गन्धित पदार्थों में कीड़े पड़ना, रक्त माँस का सड़ना, अनुभाव है थूकना, मुँह बनाना, नाक बन्द करना आदि और मोह, आवेग, व्याधि तथा मरण संचारी भाव है । निराला काव्य में वीभत्स रस के कुछ उदाहरण मिलते हैं जैसे -

"भवसागर से पार करो हे,
गह्वर से उद्धार करो हे
प्रभु उसका निवारि करो रे ।"[७१]

"इस उदाहरण में कृमि से भी पतित रूप में जन्म लेना आलम्बन है । शिशु दुर्गन्ध विकल रोता है उद्दीपन है । इस प्रकार इसमें वीभत्स रस के सभी उपकरणों का निर्वाह नहीं होने पर भी वीभत्स दृश्य सामने उपस्थित होता है ।"[७२]

वैसे निराला के काव्य में इस रस का प्रमाण नहीं के बराबर है। "राम की शक्ति पूजा" में एक स्थान पर उसका आभास प्राप्त होता है।

"देखते राम, जल रहे शलभ ज्यों रजनीचर
ताड़का सुबाहु, विराध, शिरस्त्रय, दूषण, खर।"[73]

निम्न उदाहरण में भी वीभत्स रस की छाया दिखाई देती है।

"पटे खेत शोणित लाशों से
कटे हजारों वीर जवान,
डटे लाश पर पैर जमाए
हटे न वीर छोड़ मैदान।"[74]

६- भयानक - रस :- इसका स्थायी भाव भय है। भयंकर दृश्य आलम्बन है और उद्दीपन है स्थान तथा वातावरण की चेष्टाएँ और उनके क्रिया कलाप। मोह, शंका, दैन्य संचारी भाव हैं। निराला काव्य में इस रस के कई उदाहरण मिलते हैं। "अनामिका" की "नाचे उस पर श्यामा" में कवि ने लिखा है -

"थर थर पृथ्वी थर्राती है
लाखों घोड़े कस तैय्यार
करते चढ़ते, बढ़ते अड़
झुक पड़ते हैं वीर जुझार।"[75]

उपर्युक्त उदाहरण में क्रान्तिकारी श्यामा आलम्बन है, घोड़ों का बढ़ना, अड़ना उद्दीपन है। पृथ्वी वासियों का काँपना, थर्राना अनुभाव है। इन सबका समन्वय होने पर भयानक रस उत्पन्न होता है।

दूसरा उदाहरण जैसे -

"रात रात ज्वाला मुखियाँ घोर,
आग उगलती दहक दहक दह।

कँपा रही भू-नभ के छोर
फटने लगते हैं छाती पर
घाती गोले सौ सौ बार ।"[७६]

इसके अतिरिक्त बादल राग में बादलों का गरजना भी भयानक प्रतीत होता है जैसे :-

"झूम झूम मृदु गरज गरज घन घोर
राग अमर ! अम्बर में भर निज रोर ।
झर झर झर निर्झर गिरि सर में
घर, मरु, तरु मर्मर सागर में
सरित, तड़ित गति, चकित पवन में
मन में, विजय गहन कानन में
आनन आनन में, रव घोर कठोर
राग अमर ! अम्बर में भर निज रोर ।"[७७]

इस प्रकार कवि ने भयानकर रस अलग अलग प्रकारों से आभासित करने का प्रयत्न किया है ।

७- अद्भुत-रस :- इसका स्थायी भाव है विस्मय और आश्चर्योत्पादक वस्तु आलम्बन । आश्चर्यजनक वस्तु के गुणों की महिमा उद्दीपन का विषय होता है । अनुभाव के अन्तर्गत रोमांच, गद्गद् वाणी, स्तम्भ, सम्भ्रम आदि आते हैं । वितर्क भ्रान्ति, हर्ष, मोह, आदि इस रस के संचारी भाव हैं । अनामिका की "प्रेयसी" कविता से कुछ पंक्तियां प्रस्तुत हैं जैसे -

"मिले तुम एकाएक, देख मैं रुक गई,
इच्छा से प्राण वे दूसरे के हो गये ।"[७८]

प्रेयसी का एकाएक मिल जाना, इसमें विस्मय नामक स्थायी भाव की स्थिति विद्यमान हो जाती है । अचानक मिलन से आश्चर्य की सृष्टि होती है, अत:

प्रेयसी आश्रय हुई। मन का स्तब्ध हो जाना अनुभाव हुआ। प्रेयसी के सामने प्रियतम का एकाएक आ जाना उद्दीपन है। विस्मय रूपी स्थायी भाव का आलम्बन प्रियतम है। प्रेयसी का हर्षित होना संचारी भाव है।

इसी प्रकार "राम की शक्ति पूजा" में भी अद्भुत रस को कहीं कहीं छाया दिखाई देती है जैसे -

"आज का तीक्ष्ण-शर विधृत दिाप्र कर, वेग प्रखर,
शत शैल सम्वरण शील, नील नभ गर्जित स्वर,

* * *

अनिमेष राम - विश्वजिय दिव्य शर भंग भाव
विद्धांग - बद्ध कोदण्ड मुष्टि खर रुधिर स्त्राव,

* * *

उतरा ज्यों दुर्गम पर्वत पर नैशान्धकार
चमकती दूर ताराएँ ज्यों हों कहीं पार,

* * *

युग चरणों पर आ पड़े अस्तु वे अश्रु युगल
देखा कपि ने, चमके नभ में ज्यों तारा दल,
विधा का ले आश्रय इस मन को दो प्रबोध,
झुक जायेगा कपि, निश्चय होगा दूर रोध,
कह हुए मौन शिव, पवन तनय में भर विस्मय,
सहसा नभ में अंजना रूप का हुआ उदय"

* * *

बोली माता तुमने रवि को जब लिया निगल
तब कहीं बोध था तुम्हें, रहे बालक केवल।"[79]

८- <u>हास्य-रस</u> :- इस रस का स्थायी भाव "हास" है। विभाव है व्यंग्य दर्शन असम्बद्ध प्रलाप, विचित्रता आदि मुखाकृति का मुकुलित होना अनुभाव है। निराला जी हास्य कवि के रूप में नहीं आते,

किन्तु जहाँ उन्होंने व्यंग्य किया है, वहाँ हास्य भी वर्तमान है। "अनामिका" और "कुकुरमुत्ता" में ऐसे उदाहरण मिलते हैं जैसे –

"एक थे नव्वाब,
फारस के मंगाये थे गुलाब,
बड़ी बाड़ी में लगाये,
देशी पौधे भी उगाये,
रखे माली कई नौकर।"[80]

* * *

"आया मौसिम, खिला फारस का गुलाब
बाग पर उसका पड़ा था रौबोदाब,
वहीं गन्दे में उगा देता हुआ बुत्ता
पहाड़ी से उठे सर ऐंठकर बोला कुकुरमुत्ता।"[81]

इसके अतिरिक्त "पैर सर रखकर, पीछे को भगा", "तू हरामी खानदानी", "देख मुझको मैं बढ़ा," "डेढ़ बालिश्त और ऊँचे पर चढ़ा," "तू है नकली मैं हूँ मालिक", "काम मुझ से ही सधा है, शेर भी मुझसे गधा है", "आज का फिर रूप पैराशूट ले", "रूप मेरा मैं चमकता गोला मेरा ही बमकता", "मैं पुरुष और मैं ही अबला", "अफ्रिका के आदमी आदिम खानसामा", "बावर्ची और चोबदार" ये सभी उदाहरण हास्यरस के अन्तर्गत ही आते हैं।

वैसे निराला जी के हास्य के साथ साथ व्यंग्य भी आता है इनकी व्यंग्यपूर्ण कवितायें अधिक हैं जो सिर्फ कुकुरमुत्ता में ही अधिकांश मात्रा में दिखाई देती हैं। थोड़ा बहुत हास्य "नये पत्ते" में भी देखने को मिलता है, जैसे –

"बम्हन का लड़का
मैं उसको प्यार करता हूँ,

जात की कहारिन वह,
 आती है होते लड़का
उसके पीछे मैं मरता हूँ।"[82]

इस प्रकार हम देखते हैं कि निराला जी के काव्य में हास्य एवं व्यंग्य दोनों का समान रूप से प्रवाह हुआ है।

६- शान्त-रस :- शान्त रस का स्थायी भाव निर्वेद है। इस रस में न सुख का चित्रण होता है और न दु:ख का। इस रस की स्थिति विद्यमान रहने पर मन में शांति व्याप्त रहती है वस्तुत: सांसारिक जीवन से विरक्ति या फिर तत्व ज्ञान द्वारा वैराग्य भावना की उत्पत्ति होने पर भी शांत रस की उत्पत्ति होती है। इस रस में आलम्बन होते हैं - संसार की असारता का बोध और परात्म तत्व का परिज्ञान। उद्दीपन होते हैं - सज्जनों का संग, पुराण दर्शन, धर्म शास्त्रों का अध्ययन, सांसारिक उलझनें। अनुभाव के विषय हैं - दु:खी समाज को देखकर कातरता का बोध, झंझटों से घबराना और संसार से निवृत्ति लेना।

हर्ष, उद्वेग, दैन्य, ग्लानि, निर्वेद, जड़ता जैसे विषय इस रस के संचारी भाव हैं। निराला जी की "आराधना" और "अर्चना" संग्रहों में इसी भाव के उदाहरण अधिकांश मात्रा में दिखाई देते हैं। "आराधना" से कुछ पंक्तियाँ उदाहरणस्वरूप प्रस्तुत हैं -

"विपदा हरण हार हरि हे करो पार,
प्रणव से जो कुछ चराचर तुम्हीं सार"

× × ×

"तुम्हीं" अविनाशी विहंग व्योम के देश
परिमित अपरिमाण में तुम हुए शेष
सृष्टि में दृश्य रस रूप भोजन - वेश,
फैलकर सिमटकर तुम्हीं हो निधार।"[83]

इस उदाहरण में तत्व ज्ञान का होना आलम्बन है। विपत्तियों से घबराकर परमात्मा की आराधना करना अनुभाव है। मति और उद्वेग - निर्वेद स्थायी भाव भी है। अतः शान्त रस की पूरी शर्तें इस उदाहरण में वर्तमान हैं। "अर्चना" के निम्न उदाहरण में शान्त रस के सभी उपकरण जुटाये गये हैं जैसे -

"" मानव का मन शान्त करो हे,
    काम, क्रोध, मद, लोभ दम्भ से
जीवन को एकान्त करो हे। ""[८४]

इसी प्रकार "परिमल" नामक काव्य संग्रह में भी शान्त रस के कई उदाहरण देखने को मिलते हैं जैसे -

"" बैठ लें कुछ देर,
    आओ,- एक पथ के पथिक से
प्रिय अन्त और अनन्त के
    तम - गहन - जीवन घेर
मौन मधु हो जाये। ""[८५]

इसके अतिरिक्त "डोलती नाव प्रखर है धार", "एक दिन थम जायेगा रोदन", "जीवन - प्रात समीकरण सा लघु", "चकित चितवन,-कर अनन्त पार", "प्रिय मुद्रित दृग खोलो", "सुमन भर, न लिए", "हमारा डूब रहा दिनमान", "स्वप्नों सी उन किन आँखों की", "काल वायु से स्खलित न होंगे", "नयन मुँदे जब क्या देखें", "एक बार भी यदि अजान के", "मिल गए एक प्रणय में प्राण", "देख चुका जो जो आए थे", "प्रतिपल तुम ढाल रहे सुधा - मधुर ज्योति धार", "देख पुष्प द्वार मद भरे थे नलिन मलिन हैं", "किस अनन्त का नीला अंचल हिला हिलाकर", "जलद नहीं जीवनद, जिलाया", "यौवन मरु की पहली ही मंजिल में", "प्रथम चकित चुम्बन भी सिहर समीर", "रूपक के रथ रूप तुम्हारा, नख शिख लिखे लिखे", "स्वर में छायानट - भर दो", "नई ज्योतियाँ

पाई तभी जाना तुम आई", "कैसे नये तने तुम्हारे बन्दनवार बने", "तेरी पानी भरन जानी है मानो है, ताक कमसिन बारि, सुख के सारे साज - तुम्हारे, चाहे जितना करो कद तुम, सरल न हुए न कुछ वे चरण, तुम आओ सुहाओ हमारी गली, तुम्हारे आंगन में छाये वर्णगन्ध पाये, छाया के दृश्यों-से उतरे, इसी प्रकार "आराधना" में पद्मा के पद को पाकर हो, धाये - धाराधर धावन है, आई कल जैसी पल, कमल कमल युग पद तल, अरधान की - फिल, रंग रंग से यह गागर भर दो, छेड़ दे तार तू पुनवारि, आज मन पावन हुआ है, सुख के दिन भी याद तुम्हारी, नील नील पड़ गए प्राण वे, छोटा है तो जी छोटा कर, मांझ के मांझ के प्राण धन धारिए, सुख का दिन डूबे डूब जाये, छलके छलके पैमाने क्या, सूने हैं साज आज बिना तुम्हारे विराज, सत्य पाया जहाँ जग ने, दान तेरा ही वहाँ है, बाँधो रस के निर्झर, मेरा फूल न कुम्हला पाये, पार पारावर जो है, मानव के तन के तन फहरे, सीधी राह मुझे चलने दो, वही चरण शरण बने, रहते दिन दीन शरण भज ले, खेत जोत कर घर आये हैं। इसी प्रकार "अर्चना" में भव अर्णव की तरणी तरुणा", तन की मन की धन की हो तुम, समझा जीवन की विजया हो, पंक्ति पंक्ति में मान तुम्हारा, रमण मन के मान के तन, लगी लगन जो नयन, तुम जो सुघरे पथ उतरे हो, दीप जलता रहा इत्यादि, "अनामिका" में "तब भक्त भ्रमरों को हृदय में लिए वह शतदल विमल, चिर समाधि में अचिर प्रकृति जब, मधुर मलय में यही गूँजी थी, एक वह जो तन, क्या गाऊँ माँ क्या गाऊँ, मेरे इस जीवन की है तू सरस साधना कविता, पथ पर मेरा जीवन भर दो गाता हूँ गीत मैं तुम्हें ही सुनाने को, तुम्हें खोजता था मैं पा नहीं सका, मेरी छवि उर उर में ला दो" इत्यादि कवितायें शान्त रस से ओतप्रोत हैं।

१०- भक्ति-रस :- भारतीय काव्य शास्त्र में भक्ति रस की पृथक स्थिति कतिपय स्वीकार नहीं की गई है किन्तु आधुनिक काल में विद्वानों ने भक्ति को भी पृथक रूप से रस की संज्ञा प्रदान की है। इस रस

का स्थायी भाव ईश्वरानुराग होता है। परमेश्वर इसका आलम्बन होता है और उनके अद्भुत कार्य और अनुपम गुण उद्दीपन होते हैं। गद्गद वचन अनुभाव होता है तथा संचारी भाव है। औत्सुक्य, गर्व, मद इत्यादि। अर्चना से एक उदाहरण द्रष्टव्य है जैसे -

"तिमिर दारण मिहिर दरसो,
ज्योति के कर अन्धकारा
सार जग का सजग परसो
खो गया जीवन हमारा
अन्धता से गत सहारा
गात के सम्पात पर उत्थान
देकर प्राण बरसो
क्षिप्रतर हो गति हमारी
खिले प्रति कलि कुसुम क्यारी
सहज सौरभ से समीरण पर
सहस्रों किरण हरसो।"[८६]

इस उदाहरण में तिमिर दारण परमात्मा आलम्बन है। भक्त की उज्ज्वलता तथा गति के क्षिप्रतर होने की आकांक्षा उद्दीपन है। जीवन मार्ग ज्योतित करने की प्रार्थना अनुभाव है। भक्त में निहित उत्कंठा का भाव संचारी भाव है। इस प्रकार इसमें भक्ति रस दृष्टिगत होता है। इसके अतिरिक्त अर्चना में भव सागर से पार करो हे, सोयी अँखियाँ, दो सदा सत्संग मुझको, हरि का मन से गुणगान करो, तन मन धन वारे हैं, तुम ही हुए रखवाले, नव जीवन की बीन बजाई, भजन कर हरि के चरण मन, विपद भय निवारण, पतित हुआ हूँ भव से पार इत्यादि।

इसी प्रकार आराधना में पद्मा के पद को पाकर हो सविते कविता को यह वर दो, राम के हुए तो बने काम, विपदा हरण हार, हरि हे करो

पार में कवि बड़ी व्याकुलता से उद्धार करने की प्रार्थना अपने भगवान से करता है -

"विपदा हरण हार हरि हे करो पार,
प्रणव से जो कुछ चराचर तुम्हीं सार।" [८७]

इसी प्रकार 'आशरण शरण राम' में काम के छवि धाम, रवि वंश, अवतंस, ऋषि मुनियों के मनोहंस श्री राम से मनोकामना पूर्ण करने की प्रार्थना करता है -

"अशरण शरण राम,
काम के छवि धाम
ऋषि मुनि मनोहंस
रवि वंश - अवतंस
कर्मरत निश्शांस
पूरो मनस्काम।" [८८]

भक्ति के अन्य गीतों में कमल कमल युग पद तल कृष्ण कृष्ण राम राम, काम रूप हरो काम, हे मानस के सकाल, हंसो मेरे नयन, हरि भजन करो भू भार-हरो, नाचो है रुद्र ताल, लो रूप लो नाम, अभय शंख बजा तुम्हारा, विश्व में आदि। इसी प्रकार 'अणिमा' में अवरणों में मुझे दो शरण जननि मोह मयी तमिस्त्रा दूर मेरी हो गई है, तुम्हीं हो शक्ति समुच्य की, गहन है वह अन्धकारा इन गीतों की गणना भक्ति गीतों में की जा सकती है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि निराला जी का परवर्ती काव्य भक्ति-रस से अधिक ओतप्रोत है।

११- <u>वात्सल्य-रस</u> :- भक्ति रस की भांति वात्सल्य रस की स्थिति भी भी आधुनिक काल में विद्वानों के द्वारा स्वीकार की गई है। इसका स्थायी भाव वत्सलता या स्नेह है। आलम्बन सन्तान है। बच्चे की चेष्टाएँ उसकी विद्या बुद्धि उद्दीपन है तथा आलिंगन, स्पर्श, वात्सलतावश,

सिर का चूमना अनुभाव है। संचारी भाव के अन्तर्गत, अनिष्ट शंका, हर्ष, गर्व आदि आते हैं। "सरोज स्मृति" में सरोज के प्रति कवि की वत्सलता उमड़ पड़ी है जैसे -

"याद है दिवस की प्रथम धूप
 थी पड़ी हुई तुझ पर सुरूप,
खेलती हुई तू परी चपल
 मैं दूर स्थित प्रवास से चल
दो वर्ष बाद होकर उत्सुक
 देखने के लिये अपने मुख,
था गया हुआ, बैठा बाहर
 आँगन में फाटक के भीतर।"[६६]

इस उदाहरण में वत्सलतावश निराला का सरोज के पास जाना कवि के वात्सल्य प्रेम का सूचक है यही यहाँ स्थायी भाव है। सरोज आलम्बन है। सरोज का चपलतापूर्वक खेलना तथा प्रथम धूप के पड़ने से सरोज का बाल सौन्दर्य उद्दीपन है।

सरोज को देखने के लिये फाटक के अन्दर आँगन में कवि का बैठना अनुभाव है और हृदय का औत्सुक्य संचारी भाव है।

इसके अतिरिक्त "परिमल" में भी "आदान प्रदान" नामक कविता में वात्सल्य रस देखने को मिलता है जैसे -

"शिशु पाते हैं माताओं के वक्षःस्थल पर भूला गान,
 मातायें भी पातीं शिशु के, अधरों पर अपनी मुस्कान।"

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि निराला काव्य में सभी रसों एवं रसांगों का वर्णन हुआ है। सभी प्रकार के भावों एवं रसों का समुचित प्रयोग निराला काव्य में दर्शनीय है।

--

सन्दर्भ ग्रन्थ

			पृ० क्र०
१	निराला	अणिमा	१०२
२	डेजी वालिया	निराला की संगीत साधना	४४
३	निराला	अर्चना	२४
४	वही		२
५	निराला	गीतिका	४४
६	,,	गीतगुंज	३
७	,,	गीतिका	५
८	,,	अर्चना	१०८
९	,,	अनामिका	२५
१०	वही	,,	,,
११	डा० रामदेव यादव	निराला का गीतिकाव्य	५५
१२	निराला	अनामिका	११८
१३	वही	,,	११७
१४	वही	,,	
१५	डेजी वालिया	निराला की संगीत साधना:	४१
१६	निराला	परिमल	६२
१७	,,	अर्चना	६२
१८	,,	आराधना	७३
१९	,,	,,	७२
२०	,,	अणिमा	२०
२१	,,	,,	५५
२२	,,	आराधना	१०
२३	,,	अणिमा	६२
२४	निराला	गीतिका	७३
२५	,,	,,	३९
२६	,,	अपरा	२०

२७	निराला	परिमल	५८
२८	,,	गीतिका	१४
२६	,,	परिमल	१४५
३०	,,	गीतगुंज	६३
३१	,,	अर्चना की स्वयोक्ति	
३२	,,	अर्चना	६२
३३	,,	अर्चना	६०
३४	,,	आराधना	१४
३५	,,	गीतगुंज	५५
३६	,,	आराधना	२०
३७	,,	,,	२१
३८	,,	अनामिका	८५
३६	,,	कुकुरमुत्ता	३
४०	,,	परिमल	१४८
४१	,,	नये पत्ते	१५
४२	धनंजय वर्मा	निराला काव्य और व्यक्तित्व	१७८
४३	निराला	आराधना	७४
४४	निराला	आराधना	८५,७७;२४,७ ३०,७२
४५	डा० शशी प्रभा सिन्हा	निराला के काव्य प्रतिमान	[illegible]
४६	,,	,,	८८
४७	बाबू गुलाबराय	नव रस	१३५-३६
४८	डा० संतोष गोयल	निराला का काव्य :	१२०
४६	डा० रामविलास शर्मा	निराला	३६
५०	निराला	गीतिका	४६

५१	निराला	अनामिका (प्रेयसी)	७१
५२	डा० संतोष गोयल	निराला का काव्य	१२४
५३	निराला	तुलसीदास	४७
५४	आचार्य भरत	नाट्यशास्त्र	८३
५५	सेठ कन्हैयालाल पोद्दार	काव्य कल्पद्रुम	२१५
५६	डा० शशी प्रभा सिन्हा	निराला के काव्य प्रतिमान	६१
५७	निराला	बेला	६३
५८	,,	अनामिका (राम की शक्ति पूजा)	१४८-१४६
५६	,,	परिमल	२१५
६०	वही	,,	
६१	वही	,,	२०२ से २०३ तक
६२	धनंजय	दशरूपक	१८४
६३	डा० आनन्द प्रकाश दीक्षित: रस सिद्धान्त स्वरूप और विश्लेषण)		३७५
६४	निराला	अनामिका (सरोज स्मृति)	पृ० ११८
६५	,,	परिमल	१४४
६६	,,	,,	१४४
६७	,,	अनामिका	१२६
६८	वही	,,	१२२
६६	वही	,,	१४८
७०	,,	,,	,,
७१	निराला	अर्चना	२३
७२	डा० शशी प्रभा सिन्हा	निराला के काव्य प्रतिमान	६७
७३	निराला	अनामिका	१५२
७४	निराला	अनामिका	१०६
७५	,,	,,	१०८

७६	निराला	अनामिका	१०७
७७	,,	परिमल	
७८	,,	अनामिका	३
७९	,,	,,	१४८
८०	,,	कुकुरमुत्ता	३७
८१	,,	,,	३६
८२	,,	नये पत्ते	
८३	,,	आराधना	२१
८४	,,	अर्चना	६४
८५	,,	परिमल	२६
८६	,,	अर्चना	३२
८७	,,	आराधना	२१
८८	,,	,,	४८
८९	,,	अनामिका	१२२ से १२३ तक
९०	,,	परिमल	१०४